पं0 दीन दयाल उपाध्याय का राजनीतिक एवं सामाजिक चिन्तन विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

14 सितम्बर 2017

आयोजक

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी का

समाजशास्त्र विभाग और समाजकार्य संकाय

तथा पं0 दीन दयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष समारोह समिति

के संयुक्त तत्वावधान में

पं0 दीन दयाल उपाध्याय का राजनीतिक एवं सामाजिक चिन्तन विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

पं0 दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को मथुरा जिले के छोटे से गाँव नगला चन्द्रभान में हुआ था। इनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय तथा माता का नाम रामप्यारी था। आपने मैट्रिक और इण्टरमीडिएट–दोनों ही परीक्षाओं में गोल्ड मैडल प्राप्त किया था। कानपुर विश्वविद्यालय से आपने बी० ए० किया। सिविल सेवा परीक्षा में भी उतीर्ण हुए लेकिन उसे त्याग दिया। राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य और स्वदेश जैसी प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाएँ प्रारम्भ की। 1942 से पूरी तरह से संघ के लिये काम करना शुरू किया। 11 फरवरी, 1968 को आपका देहांत हो गया। आपका भौतिक शरीर शांत हो गया किंतु विचार जीवंत है जो आज भी दुनिया के लिए प्रेरणा स्रोत है।

संस्कृतिनिष्ठा दीनदयाल जी के द्वारा निर्मित राजनैतिक जीवनदर्शन का पहला सूत्र है उनके शब्दों में– "भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं, उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।" "वसुधैव कुटुम्बकम" हमारी सभ्यता से प्रचलित है। इसी के अनुसार भारत में सभी धर्मो को समान अधिकार प्राप्त हैं। संस्कृति से किसी व्यक्ति, वर्ग, राष्ट्र आदि की वे बातें जो उनके मन, रुचि, आचार, विचार, कला–कौशल और सभ्यता का सूचक होता है पर विचार होता है। दो शब्दों में कहें तो यह जीवन जीने की शैली है। भारतीय सरकारी राज्य पत्र (गजट) इतिहास व संस्कृति संस्करण में यह स्पष्ट वर्णन है कि हिन्दुत्व और हिंदूइज्म एक ही शब्द हैं तथा यह भारत के संस्कृति और सभ्यता का सूचक है। विविधता में एकता और विभिन्न रूपों में एकता की अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति की विचारधारा में रची– बसी हुई है।

पं0 दीन दयाल जी के अनुसार हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता हैं, केवल भारत ही नहीं. माता शब्द हटा दीजिये तो भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र बनकर रह जायेगा। एक राष्ट्र लोगों का एक समूह होता है जो एक लक्ष्य ',' एक आदर्श ',' एक मिशन' के साथ जीते हैं और एक विशेष भूभाग को अपनी मातृभूमि के रूप में देखते हैं। यदि आदर्श या मातृभूमि दोनों में से किसी का भी लोप हो तो एक राष्ट्र संभव नहीं हो सकता। यह जरुरी है कि हम 'हमारी राष्ट्रीय पहचान' के बारे में सोचते हैं, जिसके बिना आजादी' का कोई अर्थ नहीं है। अपने राष्ट्रीय पहचान की उपेक्षा भारत के मूलभूत समस्याओं का प्रमुख कारण है ।जब अंग्रेज हम पर राज कर रहे थे, तब हमने उनके विरोध में गर्व का अनुभव किया, लेकिन हैरत की बात है कि अब जबकि अंग्रेज चले गए हैं, पश्चिमीकरण प्रगति का पर्याय बन गया है। पश्चिमी विज्ञान और पश्चिमी जीवन शैली दो अलग अलग चीजें हैं. चूँकि पश्चिमी विज्ञान सार्वभौमिक है और हमें आगे बढ़ने के लिए इसे अपनाना चाहिए, लेकिन पश्चिमी जीवनशैली और मूल्यों के सन्दर्भ में यह सच नहीं है।

वे मानते है कि मानवीय ज्ञान आम संपत्ति है। आजादी सार्थक तभी हो सकती है जब यह हमारी संस्कृ ति की अभिव्यक्ति का साधन बन जाए। मानवीय और राष्ट्रीय दोनों तरह से, यह आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों के बारे में सोचें। भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है कि यह जीवन को एक एकीकृत रूप में देखती है। जीवन में विविधता और बहुलता है लेकिन हमने हमेशा उनके पीछे छिपी एकता को खोजने का प्रयास किया है। बीज की एक इकाई विभिन्न रूपों में प्रकट होती है– जड़ें, तना, शाखाएं, पत्तियां, फूल और फल. इन सबके रंग और गुण अलग–अलग होते हैं. फिर भी बीज के द्वारा हम इन सबके एकत्व के रिश्ते को पहचान लेते है।

पं0 दीनदयाल जी का मत है कि धर्म के मौलिक सिद्धांत अनन्त और सार्वभौमिक हैं. हालांकि, उनके कार्यान्वयन का समय और स्थान परिस्थितियों के अनुसार भिन्न हो सकती है। धर्म के लिए निकटतम समान अंग्रेजी शब्द 'जन्मजात कानून' हो सकता है. हालाँकि यह भी धर्म के पूरा अर्थ को व्यक्त नहीं करता है. चूँकि धर्म सर्वोच्च है, हमारे राज्य के लिए आदर्श 'धर्म का राज्य' होना चाहिए। अंग्रेजी का शब्द रिलिजन धर्म के लिए सही शब्द नहीं है। यहाँ भारत में, व्यक्ति के एकीकृत प्रगति को हासिल करने के विचार से, हम स्वयं से पहले शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की चौगुनी आवश्यकताओं की पूर्ति का आदर्श रखते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (मानव प्रयास के चार प्रकार) की लालसा व्यक्ति में जन्मगत होता है और इनमें संतुष्टि एकीकृत रूप से भारतीय संस्कृति का सार है। जब राज्य में समस्त शक्तियां समाहित होती हैं– राजनीतिक और आर्थिक दोनों के परिणामस्वरुप धर्म की गिरावट होता है। रिलिजन का मतलब एक पंथ या संप्रदाय है और इसका मतलब धर्म तो कतई नहीं। धर्म एक बहुत व्यापक अवधारणा है जो समाज को बनाए रखने के जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित हैं। नैतिकता के सिद्धांतों को कोई एक व्यक्ति नहीं बनाता है, बल्कि इनकी खोज की जाती है। भारत में नैतिकता के सिद्धांतों को धर्म के रूप में माना जाता है– यानि जीवन के नियम। जब स्वभाव को धर्म के सिद्धांतों के अनुसार बदला जाता है, तो हमें संस्कृति और सभ्यता प्राप्त होते हैं।

सिद्धांतहीन अवसरवादी लोगों के लिए हमारे देश की राजनीति में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। अवसरवादिता ने राजनीति में लोगों के विश्वास को हिला दिया है। लोगों के विश्वास को जगाना है। इसके लिए व्यक्ति को वोट दें, बटुए को नहीं, पार्टी को वोट दें, व्यक्ति को नही, सिद्धांत को वोट दें, पार्टी को नहीं। शक्ति अनर्गल व्यवहार में व्यय न हो बल्कि अच्छी तरह विनियमित कार्रवाई में निहित होनी चाहिए। मानव प्रकृति में दोनों प्रवृत्तियां रही हैं –एक ओर क्रोध और लालच तो दूसरी ओर प्रेम और बलिदान।

हेगेल ने थीसिस, एंटी थीसिस और सिंथेसिस के सिद्धांतों को आगे रखा, कार्ल मार्क्स ने इस सिद्धांत को एक आधार के रूप में इस्तेमाल किया और इतिहास और अर्थशास्त्र के अपने विश्लेषण को प्रस्तुत किया, डार्विन ने योग्यतम की उत्तरजीविता के सिद्धांत को जीवन का एकमात्र आधार माना, लेकिन हमने इस देश में सभी जीवों की मूलभूत एकात्म देखा है। संघर्ष सांस्कृतिक स्वाभाव का एक संकेत नहीं है बल्कि यह उनके गिरावट का एक लक्षण है।

पंण्डित जी के उक्त गम्भीर राजनीतिक चिन्तन के आलोक में राष्ट्रपुनर्निर्माण तथा सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रासंगिकता है। यह समाज वैज्ञानिक विमर्श एवं अनुसंधान की विषय वस्तु है। इस उद्देश्य से 14 सितम्बर 2017 को एक द्विवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया है। इसमें आप सादर आमंत्रित हैं।

सेमिनार के उपविषय : इन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं पर रेखांकित किया जा रहा है :

1. पं0 दीन दयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन : अवधारणात्मक विवेचना
2. पं0 दीन दयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन और राष्ट्रवाद
3. संस्कृति और पं0 दीन दयाल उपाध्याय
4. पं0 दीन दयाल उपाध्याय की दृष्टि और सभ्यता
5. पं0 दीन दयाल उपाध्याय और सामाजिक विकास
6. पं0 दीन दयाल उपाध्याय और कमजोर वर्ग
7. पं0 दीन दयाल उपाध्याय और मॉस मीडिया
8. पं0 दीन दयाल उपाध्याय और वैश्वीकरण
9. पं0 दीन दयाल उपाध्याय और नारी विमर्श
10. पं0 दीन दयाल उपाध्याय और शिक्षा व्यवस्था
11. खुला सत्र

पंजीकरण :

इस सेमिनार में उक्त विषयों में से किसी भी एक विषय पर प्रतिभागी अपना पेपर प्रस्तुत कर सकते हैं। MS WORD में अधिकतम एक पन्ने में प्रतिभागी दिनांक 11 सितम्बर 2017 तक अपने पेपर का सारांश (Abstract) Email-ravisociology@rediffmail.com पर भेज सकते है। पूर्वाहन 11 बजे से 04 बजे तक समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में प्रतिभागी अपना पंजीकरण करा सकते हैं।

क्र. सं.	संवर्ग	पंजीकरण–शुल्क
1.	अध्यापक	रूपये 100/–(एक सौ रूपये मात्र)
2.	छात्र–छात्राएं	रूपये 70/–(सत्तर रूपये मात्र)
3.	अन्य शेष किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित प्रतिभागी	रूपये 75/–(पचहत्तर रूपये मात्र)

कार्यक्रम–संरचना

कार्यक्रम	दिनांक	समय	स्थान
उद्घाटन सत्र	14.09.2017	पूर्वाहन् 11 से 12:30	गांधी अध्ययनपीठ का प्रेक्षागृह, मा0 गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
मध्याह्न –भोजन	14.09.2017	12:30 से 01 बजे तक	,,
तकनीकी सत्र (लेख एवं शोधपत्रों का वाचन)	14.09.2017	01 से 03 बजे तक	,,
समापन–सत्र	14.09.2017	03 से 04 बजे तक	,,
प्रमाणपत्र–वितरण	14.09.2017	04 बजे से	,,

- संरक्षक डॉ0 पी0 नाग, कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- आयोजन सचिव–प्रो0 मल्लिका चतुर्वेदी, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, (मो0 न0 09451570654)
- आयोजन समन्वयक–प्रो0 रामप्रकाश द्विवेदी, संकायाध्यक्ष, समाजकार्य संकाय, (मो0 न0 09450016888)
- सेमिनार संयोजक– प्रो0 रवि प्रकाश पाण्डेय, समाजशास्त्र विभाग एवं डीन, छा.क. (मो0 न0 09415304344) **Email-ravisociology@rediffmail.com**

सेवा में,

.....

.....

.....

MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH, VARANASI
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY, FACULTY OF SOCIAL WORK AND
PT. DEENDAYAL UPADHYAYA JANM SHATABDI SAMAROH SAMITI
JOINTLY ORGANIZING A NATIONAL SEMINAR ON
''Pt. Deendayal Upadhyaya : Political And Social Thinking''
September 14, 2017

REGISTRATION FORM

1. Name (Block Letters):_____

a) Age _____ **b)** Sex : _____

2. Designation: _____

3. Institution/Organization: _____

_____

_____

4. Title of the paper: _____

_____

5. Mobile No.:_____

6. E-mail: _____

7. Accommodation will not be provided by the organizer.

8. Registration Fee:

S.No.	Nature of the Delegate	Registration Fee without accommodation
1.	For Teacher Delegate	Rs. 100/-
2.	For Student Delegate	Rs. 70/-
3.	Other than aforesaid category	Rs. 75/-

9. Registration fees must be deposited in Cash.

Date: ……., 2017 **Signature of the delegate**